शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओ एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ महिलाओ के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

• नेहा वर्मा (शोधार्थी)
• डॉ शिवानी श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष (डॉ. ए पि जे अब्दुल कलाम यूनिवर्सिटी इंदौर)

सारांश-:

शिक्षा एक सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना एवं जीवन स्तर को उँचा उठाना है। शिक्षा व्यक्ति को पशुता से उठाकर मानव बनाने असत्य से सत्य की ओरए अकल्याण से कल्याण की ओर, उन्मुख करने की प्रेरणा तथा क्षमता प्रदान करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति स्व महिलाओं का सामाजीकरण सुरल तथा प्रभावपूर्ण होता है। शिक्षण व्यक्ति के जीवन पर्यन्त वाली महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। शिक्षा निर्देशन भी है और जीवन से जोड़ने की उसे गतिमान करने की प्रक्रिया भी। व्यक्ति का चहुमुखी विकास ही शिक्षा है। अपनी अस्मिता की वास्तविकता पहचान शिक्षा के द्वारा ही होती है। इस तरह शिक्षा एक सोउदेश्य पूर्ण प्रक्रिया है, यह ज्ञान का स्थायी स्त्रोत है। पारिवारिक मूल्यों की शिक्षा भी उद्देश्य पूर्ण है। जो वर्तमान में अति आवश्यक है। और समाज के मार्गदर्शन में सहायता प्रदान करता है।

प्रस्तुत शोध इसी उदेश्य से प्रेरित एक अनुपम प्रयास है। जो की शहरी साक्षर एवं निरक्षर एवं ग्रामीण साक्षर एवं निरक्षर प्रौढ़ महिलाओ की पारिवारिक मूल्य के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन से संबंधित है।

मुझे आशा है की यह अध्ययन शैक्षिक क्षेत्र मे एक उपयोग प्रयास होगा।

प्रस्तावना-:

शिक्षा ही जीवन का दर्पण है। जिसमे महिला अपनी-अपनी योग्यता एवं क्षमताओं को प्रतिबिम्ब के रूप में देखती है। ये प्रतिबिम्ब ही संसाधन बनकर महिला के व्यक्तित्व के विकास का मार्ग प्रशस्त करते है। शिक्षा से ही महिलाओं को अतीत की सफलता एवं विफलता से परिचित कराकर भविष्य के मार्ग को प्रशस्त करती है। आजादी के बाद से ही भारत पूर्ण साक्षरता के लिये प्रयासरत रहा है। तथा प्रौढ महिलाओं के लिये शिक्षा को अनिवार्य रूप से सुलभ और निशुल्क बनाने के लिये संवैधानिक प्रावधानों में स्थान दिया गया है।

साक्षर प्रौढ महिला-:

साक्षरता के अर्थ पर अगर गौर करे तो इसका शब्दार्थ होता है 'अक्षर ज्ञान युक्त होने की स्थिति इस स्थिति में व्यक्तिगत स्तर पर साक्षरता को व्यक्तिगत साक्षरता एवं सामूहिक स्तर पर सामाजिक साक्षरता कहते है।

प्रौढ साक्षर महिला से हमारा तात्पर्य यह है की वह आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं राजनितिक क्षेत्रों में अधिकार की प्राप्ति व उनका उपभोग भैलि प्रकार से कर सके। एवं अपने पारिवारिक मल्यों को भैलि प्रकार समझ सके तथा उनकी आवश्यकता एवं उपयोगिता का महत्व जान सके।

निरक्षर प्रौढ महिला-:

निरक्षर के अर्थ पर गौर करे तो इसका शब्दार्थ होता है। अक्षर ज्ञान का न होने की स्थिति इस स्थिति में निरक्षर प्रौढ महिलाये अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक विकास में कोई विशेष योगदान देने से वंचित रह जाती है।

निरक्षर प्रौढ़ महिला से हमारा तात्पर्य यह है कि वह आर्थिक, सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक आदि क्षेत्रों मे साक्षर महिलाओ के बराबर समान अधिकार में कार्य करने से वंचित रह जाती है। निरक्षर प्रौढ महिलाओ में उनके पारिवारिक मूल्यों को महत्व एवं उसकी आवश्यकता को भी भलि प्रकार समझने में असमर्थ होती है।

पारिवारीक मूल्य-:

पारिवारीक मूल्यो से हमारा तात्पर्य यह है कि परिवार में रहने के नियम और यह नियम हमे अपने परिवार (माता-पिता दोनो पक्षो) व संस्कृति से जोड़ते हैं।

परिवार और पारिवारिक मूल्य जैसी अवधारणाएं हमेशा एक दुसरे के बिना मैजूद नहीं होती है। यदि कोई परिवार नहीं है, तो पारिवारिक मूल्य स्वतः ही अपना अर्थ खो देते है। एक पुरुष और एक महिला के बीच कोई वैध संबंध नहीं है। और मूल सिद्धान्तों के बीना कभी भी अस्तित्व में नहीं है यह उनके लिये धन्यवाद है कि कई वर्षों तक पति-पत्नी अपने अध्यात्मिक, स्वास्थ्य, एकता और अखंडता को बनाये रखने का प्रबंध करते है। पारंपरिक पारिवारिक मूल्य देखभाल और प्रेम पर निर्मित होते हैं। उत्कृष्ट संबंधों के उदाहरण, देखे जा सकते है जहाँ दो लोग एक दुसरे का सम्मान करते है। एक दुसरे की भावनाओं का सम्मान करते ये महिलाये अपने पारिवारिक मूल्य को बनाये रखने में सक्षम होती है।

एक साक्षर महिला के लिये पारिवारिक मूल्य सम्मानए विश्वास खरीदए मातृत्व की पवित्रताए निष्ठा प्रेम आदि को परिवार में बनाये रखने में सहायक होती है।

वर्तमान में परिवार के मूल्यों के रूप में इस तरह की अवधारणा को कई लोगों द्वारा अलग तरीके से व्याख्या की जाती है।

ऐसा भी होता है की व्यावहारिक रूप से प्रसंद की स्वतंत्रता नहीं है। अपने जीवन के व्यक्तित्व को बदलने की क्षमता है।

एक प्रौढ महिला के परिवार के मूल्य और परम्पराये क्या है। यह किसी भी रिश्ते को बेहतर के लिये विकसित और स्थांतरित किया जा सकता है। प्रत्येक महिलाओ को अपनी व्यक्तिगत अवधारणा है की रिश्ते एवं विवाह को कैसे बनाये रखा जाये। कुछ माता पिता एंव अभिभावक के द्वारा एवं कुछ स्वयं के जीवन के अनुभव से स्पष्ट होने में कामयाब रहे।

जब एक युवा परिवार का गठन हुआ है तो पति पत्नी हमेशा इस बारे में नहीं सोचते है की अपने व्यक्तिगत स्थान के साध विचार करने के लिये साधी की राय का सम्मान करने का क्या मतलब है अक्सर वे तुरंत एक दुसरे से केवल अच्छी चीजो की उम्मीद करना शूर करते है। और उनका मानना है की यह वह साथी है जो अच्छे को पैदा करना चाहिये। इस स्तर पर समझा जाना चाहिये की एक सामंजस्य पूर्ण संघ की जिम्मेदारी पुरुष महिला दोनो पर समान रूप से है। यहाँ हर किसी को लिंग के अनुसार अपनी स्थिति लेते हुये उन सभी की रक्षा और खेती करनी चाहिये जो एक विवाह को सफल बनाने में सक्षम है और भविष्य में बच्चे खुश रहे।

<u>अभिवृति -:</u>

अभिवृति किसी व्यक्ति घटना विचार या वस्तु के प्रति अनुकूल तथा प्रतिकूल भावना का प्रदर्शन करती है। यह अनुभवों के आधार पर अर्जित होती है, तथा वस्तुओ, मूल्यों एवं व्यक्तियों के संबंध में सीखी जाती है अभिवति का संबंध व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षो बुद्धि मानसिक प्रतिभा एवं विचारों से होता है।

आलपोर्ट के अनुसार - "अभिवृति, प्रत्युत्तर देने की वह मानसिक तथा सायुविक तत्परताओ से सम्बन्धित अवस्था

वुडवर्थ के अनुसार- "अभिवृतियाँ मत रूचि या उदेश्य की थोड़ी बहुत स्थायी प्रवर्तियाँ हैं। जिनमे किसी प्रकार के पूर्वज्ञान की प्रत्याशा और उचिता प्रक्रिया की तत्परता निहित है।

आईजनेक के अनुसार-सामान्यतः अभिवति की परिभाषा किसी वस्त या समह के संबंध में प्रत्याक्षात्मक बाघ उत्तेजनाओं में व्यक्ति की स्थिति और प्रत्युत्तर तत्परता के रूप में भी की जाती है।

फ्रीमेन के शब्दों में " अभिवृति किन्ही परिस्तिथीयों में व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने की स्वभाविक तत्परता है। जिसे सिख लिया गया है। जो व्यक्ति विशेष के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग बन गया है।

1. **श्री मती रक्षा कम्ठान** : 2005

घरेलू हिंसा से महिला संरक्षण अधिनियम 2005 का समाजशास्त्रीय अध्ययन

घरेलू हिंसा की रोकथाम एवं पारिवारिक मूल्यो की अभिवृति को बनाये के रखने से संबंधितज्ञान प्रदान किया।

1. **प्रहलाद राम जून 2016**

* शहरी व ग्रामीण महाविद्यालयी छात्र छात्राओं की सामान्य मानसिक योग्यता का अध्ययन करना"

इस अध्ययन से शहरी व ग्रामीण महिलाओं की सामान्य मानसिक योग्यता एवं पारिवारिक मूल्यों के प्रति उनकी मानसिकता ज्ञात किया गया।

1. **माधुरी सिंह अनदम 2016**

- विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में स्त्रियों की शैक्षिक स्थिति का अध्ययन"

1. **रजनी तिवारी sep 2016**

"भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति

इसमे भारतीय प्रौढ़ महिलाओ की कामकाजी, होते हुये भी पारिवारिक मूल्य के प्रति अभिवृति का ज्ञान ज्ञात किया गया।

1. **दीपेश कुमार 2016**

ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों का अपनी बालिकाओ की उच्च शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन इस अध्ययन के द्वारा शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन ज्ञात किया

- **शरद सिन्हा संप जितेन्द्र कुमार लोढ़ा**

"आर्थिक सबलीकरण के स्त्री-विमर्श में शिक्षा की भूमिका रूप उत्तरदायित्व"

महिलाओं के जीवन के आर्थिक उन्नयन एवं पारिवारिक मूल्य की महत्ता को जानना एवं सामाजिक उन्नति का अध्ययन किया गया।

(शोधार्थी को इस बात की आवश्यकता महसूस हुयी की वर्तमान समय में साक्षर व निरक्षर प्रौढ महिलाये पारिवारिक मूल्यों के प्रति क्या दृष्टिकोण रखती है। अभी तक सामाजिक नैतिक मूल्यों पर अधिक अध्ययन हुये है. लेकिन महिलाओ के पारिवारिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन न के बराबर हुआ है। लेकिन शोधार्थी के मस्तिष्क मे यह विषय समस्या के रूप में उभरा जिसका समाधान इस शोध पत्र में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

स्त्री ही बालक के जीवन में मूल्यों का रोपण कर बालक के जीवन को मूल्यवान बना देती है।

मूल्यहीनता के धरातल पर खड़ी पीढ़ी को पश्चिम की हवा भोगवादी सांस्कृति तथा भौतिकता की चकाचौंध रिझा रही है। और वह औरये बंद किये उसके पीछे भाग रही है। वह लोलूपता अच्छी नहीं है। पाया जा रहा है की इस भोगवाद और लोलूपता के वशीभूत होकर महिलाये दिग्भ्रमित हो रही है। उसमे भटकाव बढ़ रहा है और इसके लिये मीडिया भी बहुत हद तक उत्तरदायी है।

उपर्युक्त सभी बातो के कारण शोधार्थी के मन में यह जिज्ञासा उत्पन हुयी की बदलते हुये परिवेश में महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति किस प्रकार की है। साक्षर एवं निरक्षर महिलाये मूल्यों के प्रति क्या नजरिया रखती है।

उदेश्यः

1- शहरी साक्षर प्रौढ महिलाओं एवं शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. **ग्रामीण निरक्षर एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ महिलाओ की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन** करना।

परिकल्पनाः

1- शहरी साक्षर प्रौढ महिलाओ एव शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओं की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

2- ग्रामीण निरक्षर प्रौढ महिलाये एवं ग्रामीण साक्षर प्रौढ महिलाये पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृति में सार्थक अंतर नहीं होता है।

शोध प्रविधिः प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रयोगात्मक प्रकृति का है।

न्यादर्श वितरण चार्ट
सम्पूर्ण यादर्स 200

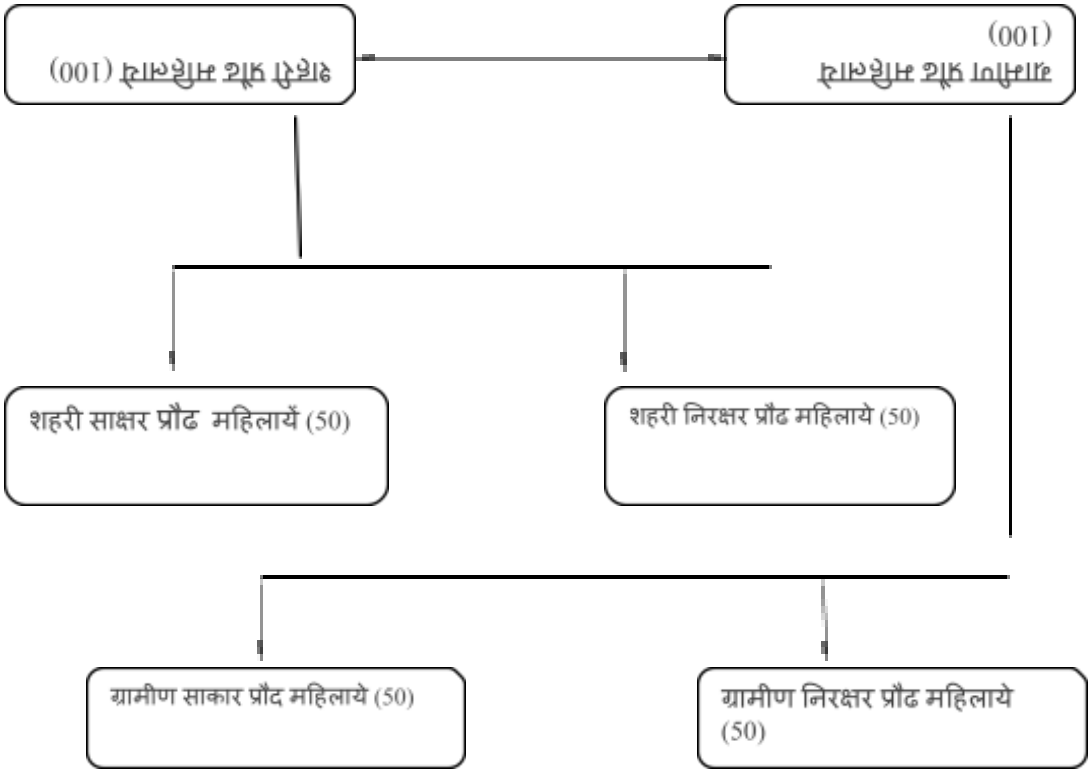

उपकरण-:

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिये प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत प्रश्नावली मे 75 प्रश्नों का समावेश है और इसका प्रयोग आकड़ो के संकलन मे किया गया है।
- प्रश्नावली को निश्चित क्रम मे व्यवस्थित किया गया है।
- प्रश्नावली की भाषा हिन्दी है जो की संघवा क्षेत्र के निवासियों द्वारा बोली जाती है।

शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओ एवं ग्रामीणा निरक्षर प्रौढ महिलाओ की पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना। प्रस्तुत शोध का चतूर्य उदेश्य शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओ एव ग्रामीण निरक्षर प्रौढ महिलओ की पारिवारिक मूल्यो के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अतः इस उदेश्य से सम्बधित प्रदतो का विश्लेषण स्वतंत्रन्टी परिक्षण की सहायता से किया गया है इसका परिणाम तलिका 4.4 में दिया गया है।

	N	Df	M	S.D	T	Sig
शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाये	५०	९८	१००	९.५५	१.०४	—०००'''
ग्रामीण निरक्षर प्रौढ महिलाये	५०		९८.१	४		

"0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक शोध का चतुर्थ उद्देश्य शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना था प्रस्तुत उद्देश्य में एक स्वतंत्र चर साक्षरता तथा एक आश्रित चर पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति थे यहां स्वतंत्र चर के दो स्तर शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति थे अतः इस उद्देश्य के विश्लेषण के लिए स्वतंत्र टी परीक्षण का उपयोग किया गया इस उद्देश्य के विश्लेषण एवं प्राप्त परिणाम तालिका 4.4 में दर्शाए गए हैं

तालिका 4.4 देखने पर स्पष्ट होता है कि शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के लिए टीका मान 1.04 है जो किdf98 के साथ सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है अर्थात शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाएं और ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के अभिवृत्ति के मध्य में सार्थक अंतर है अतः शून्य परिकल्पना की शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं एवं ग्रामीण निरक्षर

प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अंतर नहीं है निरस्त की जाती है अतः शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं एवं ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों की अभिवृत्ति में अंतर है।

आगे तालिका 4.4 से स्पष्ट है कि शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाएं के पारिवारिक मूल्यों की अभिवृत्ति का माध्य 100 है जो कि ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों की अमिवृत्ति का मान 98.1

से अधिक है अतः कहा जा सकता है कि शहरी निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों की अभिवृद्धि ग्रामीण निरक्षर प्रौढ़ महिलाओं के पारिवारिक मूल्यों की अभिवृत्ति से अधिक पाई गई है।

इस तालिका के अध्ययन से हम एक बात और भी स्पष्ट कर सकते हैं की शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओ का शिक्षित न होते हुये भी पारिवारिक मूल्यो एंव सामाजिक विकास मे कुछ न कुछ योगदान रहा है। एक शिक्षित समाज स्थापना शहरी साक्षर प्रौढ महिलाओं एवं ग्रामीणो साक्षर प्रोढ महिलाओं द्वारा अर्जित अंकों का विवरण विश्लेषण

- ग्राफ क.03 के निरीक्षण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतम 15 शहरी साक्षर प्रौढ महिलाओं ने 1088111 के मध्य अंक प्राप्त किया, जबकि अधिकतम 19 ग्रामीण साक्षर पौढ महिलाओं ने 1018104 के बीच अंक प्राप्त किए।

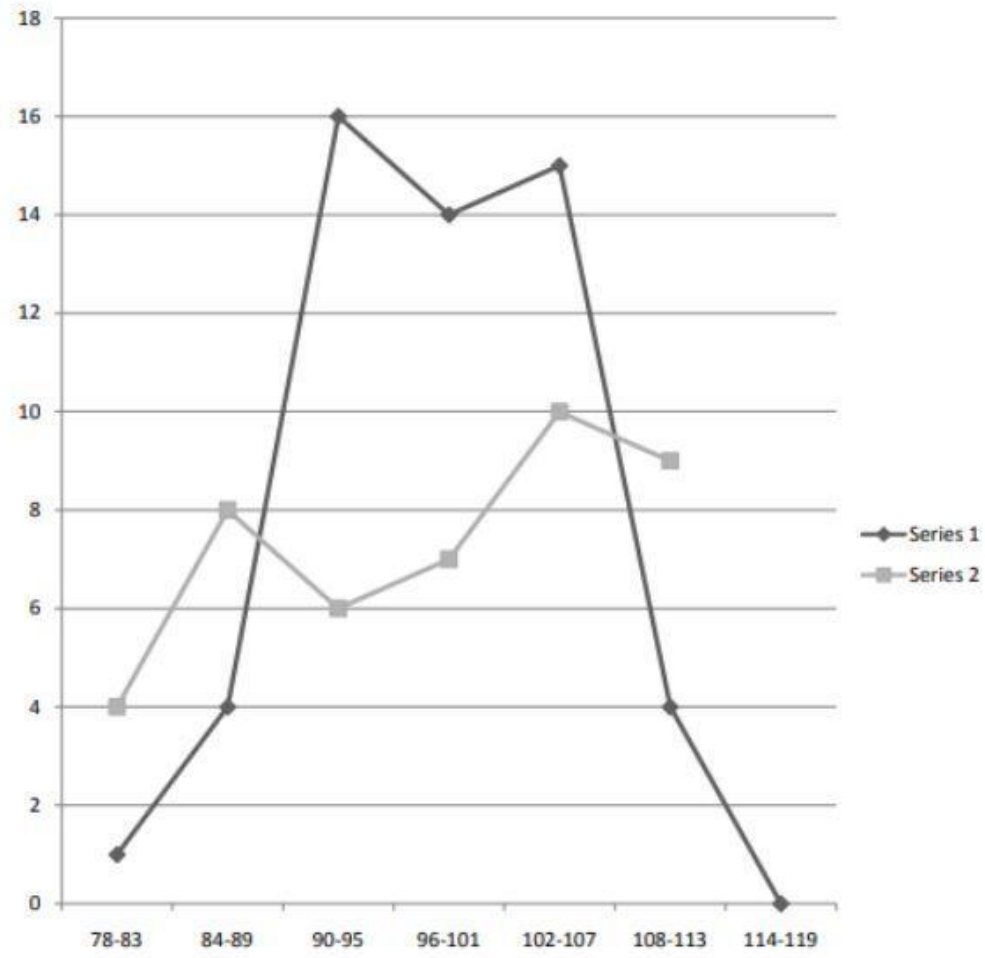

<u>विश्लेषण-:</u>

गाफ क.4 **को देखने से पता चलता है कि शहरी निरक्षर प्रौढ महिलाओं द्वारा** 102 -107 **के बीच सर्वाधिक अंक अर्जित किये**, **जबकि ग्रामीण निरक्षर प्रौढ महिलाओं द्वारा** 82-86 **के बीच सर्वाधिक अंक अर्जित किये गये।**

ग्राफ द्वारा प्रदर्शन-5 **शहरी साक्षर प्रौढ महिलाओं एंव गामीणो निरक्षर प्रौढ महिलाओं द्वारा महिलाओं द्वारा अर्जित अको का विवरण।**

सन्दर्भ ग्रंथ सुचि-:

- **बरी तथा मार्गेन,** (1969): "शिक्षकों के मूल्यों के परीक्षण संबंधी व्यवहारों के बीच अध्ययन
- **कोठारी दौलत सिंह**:शिक्षा आयोग की - रिपोर्ट 1964-66]
- **कोल** (1973) : राजनीतिक सामाजिक, धार्मिक सौधान्तिक मूल्यों की माप का कॉलेज व स्कूल के
- अध्यापको के मध्य अध्ययन।
- **जैन क. प्रतिभा** (2004-05): सरस्वती विद्यालय तथा अन्य विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के नैतिक मूल्यों का
- तुलनात्मक अध्ययन।
- **बेनामिकर तथा टेनीसन** (1970): "मूल्यों का शिक्षा स्तर के शिक्षकों पर अध्ययन' ।
- **मेकलीन तथा अन्य** (1955): पुरुष शिक्षकों की शिक्षा स्तर पर निम्न आर्थिक मूल्य तथा उच्च सामाजिक
- मूल्यों का अध्ययन।
- **भौमिक आर** (1977): प्राचीन भारत मे नैतिक अध्ययन व्यवस्था का अध्ययन ।
- **बारनाथ तथा फोडिर्ष,** (1961): शिक्षा के समूह में धार्मिक तथा सामाजिक मूल्य ।